स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानियों में सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का मूल्यांकन

शिखा उमराव,

शोध छात्रा
ज्वाला देवी विद्या मन्दिर पी0जी0
कालेज, कानपुर

सारांश

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी–कहानी के क्षेत्र में बदलाव आया है। हिन्दी कहानियों की नवीनतम धारा को प्रयोगवादी कहानी या आधुनिकता बोध की कहानी कही जा सकती है। औद्योगिकरण, भ्रष्ट व्यवस्था, बदलते परिवेश, महानगरीय जीवन आदि विषयों एवं भावों से जुड़कर हिन्दी कहानी की वस्तु और प्रक्रिया नवीन होती गई हैं। आजादी के बाद जो बदलाव आये उनमें से कुछ अच्छे व कुछ बहुत ही गम्भीर समस्या बनकर सामने आयें। स्वतंत्रता के बाद बहुत सी समस्याओं ने लोगों के घर व मस्तिष्क में जमाव ले लिया जिससे व्यक्ति में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिज्ञ जैसे समस्याओं से खुद को घिरा महसूस करने लगा। इन्हीं समस्याओं को हिन्दी कहानीकारों ने अपनी कलम से उतारने का सफल प्रयास किया और प्रत्येक समस्या पर नजर रखी।

भारतीय समाज के लिये स्वतंत्रता सामाजिक रूप से भले ही बहुत महत्वपूर्ण घटना न हो, किन्तु भारतीय व्यक्ति की मानसिकता के परिवर्तन में यह घटना निश्चय ही महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता की परिकल्पना भारतीय जन के मस्तिष्क में सन् 1947 के आसपास ही नहीं उगी थी, वरन् इसका क्रमिक विकास काफी समय पूर्व ही हो गया था। स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिज्ञ आदि समस्याओं ने जन्म ले लिया था जिसे हम हिन्दी कहानियों में देख सकते है। हिन्दी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में इन समस्याओं को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। स्वतंत्रता के बाद हमारा देश अनेक समस्याओं से जूझने लगा था प्रत्येक दिशा में व्यक्ति जटिल समस्याओं से खुद को घिरा महसूस कर रहा था। हमारा देश तो आजाद हो गया लेकिन हम नहीं आजाद हुये। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही औसत भारतीय की उन कल्पनाओं के साकार होने का समय आया अब उनकी आकांक्षाएँ मात्र कल्पना न रहकर व्यवहारिक स्वरूप ग्रहण करने के लिये उत्सुक थीं। स्वतंत्रता पूर्व का कहानी साहित्य कुछ पूर्व आदर्शों अथवा मान्यताओं के आधार पर निर्मित हुआ है। प्रेमचन्द्र एवं सुदर्शन का मूल्यपरक बाह्य सुधारवाद, प्रसाद का रूमानी सुधारवाद, जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी आदि का मनोवैज्ञानिक आग्रह सभी कुछ सामयिक प्रचलित आग्रहों से प्रभावित साहित्य है। इस साहित्य के माध्यम से किसी स्वंतत्र जीवन–दृष्टि का निर्माण नहीं हुआ जबकि स्वतंत्रयोत्तर कहानी–साहित्य मुख्य रूप से एक नई जीवन दृष्टि की तलाश है।

स्वातंत्रयोत्तर कहानी–साहित्य की उक्त रचना–यात्रा में प्रायः सभी पहलुओं को लेकर कहानियाँ लिखी गई, स्वतंत्रता–पूर्व कहानी

साहित्य के प्रेरणा–स्रोत मुख्यता समाज और जीवन की विशेषताएँ व जटिलताएँ न होकर मान्यताएँ, तथा आदर्श थे, जिनका सामाजिक रूप में प्रचलन था। स्वतंत्रता के बाद से लेकर अब तक के भारतीय समाज दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहला वर्ग वह था, जो स्वतंत्रता के आस–पास सोचने के स्तर पर पर्याप्त था तथा जिसे स्वतंत्रयोत्तर भारत के नए रूप का निर्माण करना था। इस वर्ग में वे सभी बुद्धजीवी, राजनीतिज्ञ और व्यवसायी आ जाते हैं। स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी–कहानी की मुख्य विशेषता है – उसके द्वारा समाज के विविध अंगों का सूक्ष्म चित्रण। कहानी के क्षेत्र में अब तक जो भी लेखन प्रकाश में आया था वह प्रायः बिखरा हुआ और बहुत कुछ बाह्मात्मक था। प्रेमचन्द्र ने जिस ग्रामीण जीवन का चित्रण किया और यशपाल ने जिस सामाजिक विरूपताओं को चित्रित किया है उनका रूप उतना विविध और सूक्ष्म नहीं है। ये लोग ग्रामीण और शहरी जीवन को उन सूक्ष्मताओं को चित्रित नहीं कर पाए, जिसके आधार पर हम ग्रामीण तथा शहरी जीवन की चारीत्रिक विशेषताओं को पकड़ पाते।

निर्मल वर्मा की कहानियों के कथ्य किसी विशिष्टगण अथवा महानगर तक की सीमित नहीं हैं किन्तु उनके माध्यम से हम उस समाज की संपूर्णता का अध्ययन कर सकते है। निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' का वातावरण रानी खेत जैसे एक एक छोटे–से पहाड़ी कस्बे का है, किन्तु लतिका जिस मनःस्थिति में जीती है। उसके माध्यम से हम स्वातं«योत्तर भारतीय समाज में निरंतर संक्रमित होते हुए बिखराव के बिंदुओं को जान सकते है। लतिका, एक पर्वतीय शहर के आवासीय गर्ल्स होस्टल स्कूल की वार्डन है। लतिका मेजर गिरीश नेगी से प्रेम करती थी लेकिन, यह प्रेम अपने अंजाम तक नहीं पहुँच पाता। क्योंकि गिरीश की मृत्यु हो जाती है। नामवर सिंह ने 'परिन्दे' कहानी को मुक्ति में प्रश्न से जोड़कर देखते है – ''एक तरह से देखा जाये तो परिन्दे की लतिका की समस्या स्वतंत्रता या मुक्ति की समस्या है – अतीत से मुक्ति, स्त्री से मुक्ति, उस चीज से मुक्ति जो हमें चलाये चलती है और अपने रेले में घसीट ले जाती है।''

कमलेश्वर की 'गर्मियों के दिन' यह कहानी सन् 1954 के आस–पास लिखी गई। उन्होंने कई कहानियों की पृष्ठभूमि कस्बे और शहर के बीच की यातनाओं के मध्य तैयार की 'गर्मियों के दिन' कहानी आजादी के बाद के गाँवों की बदलती स्थितियों का जिक्र बड़ी तल्खी से आया है इस कहानी में निरर्थकता बोध, पाखंड, के साथ दमन और पीड़ा के देश की चेतना–सम्पन्न अभिव्यक्ति दिखाई देती है इस कहानी में सामाजिक जीवन का यथार्थ स्पष्ट होता है। कमलेश्वर, सर्वहारा और मजदूर वर्ग के लेखक के रूप में जाने गये। मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, शिवप्रसाद सिंह और मार्कण्डेय, इनके समकालीन थे।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय गाँवों में अनेक परिवर्तन हुए ग्रामीण विकास की योजनाएँ चालू की गई तथा ग्रामीण व्यक्तियों के रहन–सहन में भी पर्याप्त बदलाव आया इस परिवर्तन को लेकर कई कहानीकारों ने रेखांकित किया है। गाँवों के विकास के साथ ही स्वातंत्रयोत्तर भारत में ग्रामों का शहरीकरण हुआ। ऐसे स्थानों में यातायात की सुविधाएँ, बिजली तथा आधुनिकता की गंध का तो सूत्रपात हो गया इस तरह के विकसित इन कस्बों पर कहानी के क्षेत्र में पर्याप्त लिखा गया सबसे अधिक कलापूर्ण और सकल कहानियाँ इन्हीं कस्बों की मनोवृत्ति को लेकर लिखी गई। अमरकांत पहले कहानीकार है, जिन्होंने इस प्रकार की सफल कहानियाँ दी। अमरकांत की कहानी 'जिन्दगी और जोंक' में रजुआ नामक एक भिखमंगे की कहानी है। जिसे लेखक ने मोहल्लों में आते–जाते एवम् लोगों के घर जाते देखा था। लेखक ने इसका कारण जानना चाहा तब पता चला कि रजुआ पर साड़ी चुराने का आरोप लगा

है। बाद में पता चलता है कि वह निर्दोष है। सब उससे सहानुभूति रखने लगते है और उसे बचा हुआ खाना दे देते है। इस तरह से वह पूरे मोहल्ले का नौकर बन कर रह जाता है। अमरकांत की यह कहानी भी बहुत प्रसिद्ध हुई। आर्थिक अभाव के कारण कोई व्यक्ति कितना मजबूर और बेसहारा बन जाता है इसे 'जिन्दगी और जोंक' के रजुआ के माध्यम से समझा जा सकता है।

आजादी के बाद हिन्दी की कथा रचना ने दूसरी महत्वपूर्ण करवट ली क्योंकि आजादी से पहले जिस समाज की परिकल्पना की गई थी वैसे समाज के निर्माण में संदेह दिखने लगे थे। दूसरे विश्व युद्ध, विभाजन की त्रासदी और समानता के सपनों के बिखराव के परिदृश्य ने देश की जनता का मोहभंग कर दिया। फलस्वरूप कहानीकार की नई पीढ़ी ने अपनी–अपनी संवेदनाओं की नई जमीन तलाशी है।

सन् 1947 के बाद कहानीकारों ने अपनी लेखनी में आजादी के बाद की उत्पन्न समस्याओं को अपनी लेखनी में उतारा है इन कहानीकारों ने उस समय की समस्त समस्याओं को बखूबी से समझा व अपनी कहानी का हिस्सा बनाया। वह वक्त बहुत ही समस्याओं भरा था। आजादी के बाद लोगों को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा जैसे – सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि।

नए कहानीकारों ने यह महसूस किया कि वैचारिक स्तर पर यह मूल्यों के विघटन का दौर है। इस दौर में संदेह, अविश्वास, मोहभंग, भय और आजादी के बाद जिस प्रकार शहरी मध्य वर्ग की संख्या उत्तोरत्तर बढ़ती गई, उसी प्रकार उसकी समस्याओं का घनत्व भी उसी अनुपात में बढ़ता गया। इस स्थितियों के प्रमाणिक स्तर पर उस दौर की कहानियों में मौजूद है।

मोहन राकेश की कुछ कहानियाँ – 'आखिरी सामान', 'मिस पाल', 'भूखे' और 'सुहागिन' आदि स्त्री को उसके पूरे सामाजिक सन्दर्भ में प्रस्तुत करती है। 'आखिरी सामान' की बेला भंडारी मूल्यविहीन, भ्रष्ट सामाजिक–व्यवस्था में उसके मूक प्रतिशोध कर प्रतीक बन जाती है। मूल्यों के इस व्यापक ह्रास की स्थिति में 'मिस पाल' की तिक्तता और हताशा उसके लिये एक अनिवार्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य तैयार करती है। मोहन राकेश सीमित रचनात्मक सरोकारों वाले लेखक है। रचना वस्तु के चुनाव की उनकी अपनी सीमाएँ है। भारतीय समाज की संघर्षशील और परिवर्तनकारी चेतन का अभाव उनकी सभी कहानियों में देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता के बाद जिस तरह से सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हुई ठीक उसी तरह से आर्थिक समस्या ने भी जन्म ले लिया था देश विभाजन के पश्चात लोग बेघर हो गये थे स्त्री–बच्चे सब सहारा ढूढ़ रहे थे इसका उदाहरण म्यांमार के रोहंगिया मुसलमान जो पश्चिम–बंगाल से भाग कर आये और जो अभी भी कही के निवासी नहीं बन सके !

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- हिन्दी कहानियाँ एक आलोचनात्मक अध्ययन, डा0 श्री कृष्णलाल (पृष्ठ – 30)
- संपादक, बटरोही, हिन्दी कहानी के अठारह कदम, वाणी प्रकाशन, 2002 पृष्ठ सं0 – 24
- वही पृष्ठ सं0 – 25
- वही पृष्ठ सं0 – 33
- आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम, 2002 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 – 110
- मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, 2018, पृष्ठ संख्या– 29

- हिन्दी कहानी : पहचान और परख, पृष्ठ – 80
- डॉ0 कमलेश्वर प्रसाद सिंह, नयी कहानी और मध्यम वर्गीय जीवन, पृष्ठ सं0– 69
- मधु धवन, हिन्दी कहानी का वैचारिक पक्ष, 2017, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ सं0 – 23
- कमलेश्वर, नयी कहानी की भूमिका, 2015, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं0–82